4 समास

समास का अर्थ है—संक्षेपीकरण अर्थात दो शब्दों को मिलाकर एक कर देना।

परस्पर संबंध रखने वाले दो या दो से अधिक पदों (शब्दों) के योग से एक नए शब्द को बनाने की प्रक्रिया को 'समास' कहते हैं।

जैसे—
युद्ध के लिए भूमि = युद्धभूमि
घोड़ों की दौड़ = घुड़दौड़
सत्य के लिए आग्रह = सत्याग्रह
परम है जो आनंद = परमानंद

समस्तपद

समास अर्थात संक्षेप की प्रक्रिया द्वारा छोटे बनाए गए पद को **समस्तपद** या **सामासिक शब्द** कहा जाता है।

जिन दो शब्दों के मेल से समस्तपद बना हो, उसके पहले शब्द को **पूर्वपद** और दूसरे को **उत्तरपद** कहा जाता है। जैसे—देश का वासी = 'देशवासी' समस्तपद में 'देश' पूर्वपद और 'वासी' उत्तरपद है।

समास-विग्रह

समस्तपद को पुनः तोड़ने अर्थात उसके खंडों को पृथक-पृथक करके पहले जैसी अवस्था में लाने की क्रिया को **विग्रह** या **समास-विग्रह** कहा जाता है। जैसे—

गुरुदक्षिणा समस्तपद का विग्रह होगा—**गुरु के लिए दक्षिणा**
प्रतिदिन समस्तपद का विग्रह होगा — **प्रत्येक दिन/दिन-दिन**

समस्त पद में कभी पहला पद प्रधान होता है, कभी दूसरा पद और कभी कोई अन्य पद प्रधान होता है, जिसका नाम समस्तपद में नहीं होता और समस्तपद उस तीसरे पद का विशेषण अथवा पर्याय होता है। पद की प्रधानता तथा उसके विग्रह के आधार पर ही प्रायः इस बात का निर्णय होता है कि उसमें कौन-सा समास है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि–

(1) शब्दों को संक्षिप्त करने की प्रक्रिया को समास कहते हैं।
(2) समास के लिए कम-से-कम दो पद होने चाहिए।
(3) पहले पद को पूर्वपद और दूसरे पद को उत्तरपद कहते हैं।
(4) शब्दों को जोड़ने या मिलाने से जो नया शब्द बनता है, उसे समस्तपद कहते हैं।
(5) समस्तपद को अलग करने की क्रिया समास-विग्रह कहलाती है।
(6) समास-प्रक्रिया में बीच की विभक्तियों का लोप हो जाता है।
(7) समास के प्रयोग से भाषा में संक्षिप्तता और उत्कृष्टता आती है।

समास के भेद

समास के निम्नलिखित **छह** भेद हैं—

(1) अव्ययीभाव समास (2) तत्पुरुष समास
(3) कर्मधारय समास (4) द्विगु समास
(5) द्वंद्व समास (6) बहुव्रीहि समास

1. अव्ययीभाव समास

जिस समास का **पहला पद अव्यय** होता है और **प्रधान** होता है, उसे **अव्ययीभाव समास** कहते हैं। इसका सामासिक पद भी **अव्यय** बन जाता है। जैसे—

सामासिक पद	**समास-विग्रह**
यथानियम	नियम के अनुसार
प्रतिमास	प्रत्येक मास, मास-मास
यथासंभव	जितना संभव हो
बेनाम	बिना नाम के

2. तत्पुरुष समास

जिस समास का **दूसरा पद प्रधान** होता है और दोनों पदों के बीच से कारकों के परसर्ग हट जाते हैं, उसे **तत्पुरुष समास** कहते हैं। इस समास में कारकों की विभक्तियों के नाम के अनुसार इसके छह भेद किए गए हैं—

तत्पुरुष समास के भेद

(क) कर्म तत्पुरुष

ग्रंथकार = ग्रंथ **को** लिखनेवाला
यशप्राप्त = यश **को** प्राप्त
माखनचोर = माखन **को** चुरानेवाला
गगनचुंबी = गगन **को** चूमने वाला **[CBSE 2010 (Term – I)]**
सम्मानप्राप्त= सम्मान **को** प्राप्त
गिरहकट = गिरह **को** काटने वाला
जेबकतरा = जब **को** कतरने वाला
सुखप्राप्त = सुख **को** प्राप्त **[CBSE 2010 (Term – I)]**
शरणागत = शरण **को** आगत
आशातीत = आशा **को** लाँघकर गया हुआ

GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

© GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

परलोकगमन = परलोक **को** गमन
परलोकगत = परलोक **को** गया हुआ
इन उदाहरणों में कर्म कारक की विभक्ति '**को**' का लोप हुआ है।

(ख) करण तत्पुरुष

सूरकृत = सूर **द्वारा** कृत
मदांध = मद **से** अंधा
वाल्मीकिरचित = वाल्मीकि **द्वारा** रचित
रोगग्रस्त = रोग **से** ग्रस्त
अशोकनिर्मित = अशोक **द्वारा** निर्मित
शक्तिसंपन्न = शक्ति **से** संपन्न
तुलसीकृत = तुलसी **द्वारा** कृत
ईश्वर प्रदत्त = ईश्वर **द्वारा** प्रदत्त
हस्तलिखित = हस्त **से** लिखित **[CBSE 2010 (Term – I)]**
मुँहमाँगा = मुँह **से** माँगा हुआ
शोकातुर = शोक **से** आतुर
नीतियुक्त = नीति **से** युक्त
शराहत = शर **से** आहत
रोगयुक्त = रोग **से** युक्त
कष्टसाध्य = कष्ट **से** साध्य
भयभीत = भय **से** भीत
अकालपीड़ित = अकाल **से** पीड़ित **[CBSE 2010 (Term – I)]**
दयार्द्र = दया **से** आर्द्र
वाग्दत्ता = वाक् (वाणी) **से** दी हुई
शोकाकुल = शोक **से** आकुल
वाणहत = वाण **से** हत
पददलित = पद (पैर) **से** दलित
गुरुदत्त = गुरु **द्वारा** दत्त
मनमाना = मन **से** माना हुआ
भुखमरा = भूख **से** मरा हुआ
मनगढ़ंत = मन **से** गढ़ा हुआ
इन उदाहरणों में करण कारक की विभक्ति '**से**' अथवा '**द्वारा**' का लोप हुआ है।

(ग) संप्रदान तत्पुरुष

हथघड़ी = हाथ **के लिए** घड़ी
देशभक्ति = देश **के लिए** भक्ति **[CBSE 2010 (Term – I)]**
अनाथालय = अनाथों **के लिए** आलय
नाट्यशाला = नाट्य **के लिए** शाला
सत्याग्रह = सत्य **के लिए** आग्रह
हथकड़ी = हाथ **के लिए** कड़ी
गुरुदक्षिणा = गुरु **के लिए** दक्षिणा **[CBSE 2010 (Term – I)]**
हवनसामग्री = हवन **के लिए** सामग्री
डाकव्यय = डाक **के लिए** व्यय
विद्यालय = विद्या **के लिए** आलय
गौशाला = गौओं **के लिए** शाला
पाठशाला = पाठ **के लिए** शाला
युद्धभूमि = युद्ध **के लिए** भूमि
डाकगाड़ी = डाक **के लिए** गाड़ी **[CBSE 2010 (Term – I)]**
राहखर्च = राह **के लिए** खर्च **[CBSE 2010 (Term – I)]**
आरामकुर्सी = आराम **के लिए** कुर्सी
देशार्पण = देश **के लिए** अर्पण
क्रीड़ाक्षेत्र = क्रीड़ा **के लिए** क्षेत्र
रसोईघर = रसोई **के लिए** घर
जेबघड़ी = जेब **के लिए** घड़ी
देवबलि = देवताओं **के लिए** बलि
मालगाड़ी = माल **के लिए** गाड़ी
इन उदाहरणों में संप्रदान कारक की विभक्ति '**के लिए**' का लोप हुआ है।

(घ) अपादान तत्पुरुष

जन्मांध = जन्म **से** अंध
बंधनमुक्त = बंधन **से** मुक्त
पथभ्रष्ट = पथ **से** भ्रष्ट **[CBSE 2010 (Term – I)]**
भयमुक्त = भय **से** मुक्त
देशनिकाला = देश **से** निकाला **[CBSE 2010 (Term – I)]**
ऋणमुक्त = ऋण **से** मुक्त
पदच्युत = पद **से** च्युत
शक्तिविहीन = शक्ति **से** विहीन
धर्मविमुख = धर्म **से** विमुख
जीवनमुक्त = जीवन **से** मुक्त
धनहीन = धन **से** हीन
गुणहीन = गुण **से** हीन
जातिच्युत = जाति **से** च्युत
लक्ष्यभ्रष्ट = लक्ष्य **से** भ्रष्ट
रोगमुक्त = रोग **से** मुक्त
विद्यारहित = विद्या **से** रहित
इन उदाहरणों में अपादान कारक की विभक्ति '**से**' का लोप हुआ है।

GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

© GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

(ङ) संबंध तत्पुरुष

सेनानायक = सेना **का** नायक
यमुनातट = यमुना **का** तट
भूदान = भू **का** दान
राजपुत्र = राजा **का** पुत्र **[CBSE 2010 (Term – I)]**
राष्ट्रगौरव = राष्ट्र **का** गौरव
मातृभक्त = माता **का** भक्त
पदाकांक्षा = पद **की** आकांक्षा
सेनापति = सेना **का** पति
परीक्षार्थी = परीक्षा **का** अर्थी
राष्ट्रपति = राष्ट्र **का** पति
स्वास्थ्यरक्षा = स्वास्थ्य **की** रक्षा **[CBSE 2010 (Term – I)]**
भारतवासी = भारत **का** वासी
राजसभा = राजा **की** सभा
जलधारा = जल **की** धारा
राजप्रासाद = राजा **का** प्रासाद
दिनचर्या = दिन **की** चर्या
राजमहल = राजा **का** महल
गृहस्वामी = गृह **का** स्वामी
राजाज्ञा = राजा **की** आज्ञा
जीवनसाथी = जीवन **का** साथी
राजपुरुष = राजा **का** पुरुष
भारतरत्न = भारत **का** रत्न
राजदूत = राजा **का** दूत
उद्योगपति = उद्योग **का** पति
रामभक्ति = राम **की** भक्ति
भ्रातृस्नेह = भ्राता **का** स्नेह
पुष्पवर्षा = पुष्पों **की** वर्षा **[CBSE 2010 (Term – I)]**
गंगातट = गंगा **का** तट
पवनपुत्र = पवन **का** पुत्र
प्रेमसागर = प्रेम **का** सागर
सिरदर्द = सिर **का** दर्द
लक्ष्मीपति = लक्ष्मी **का** पति **[CBSE 2010 (Term – I)]**

इन उदाहरणों में संबंध कारक की विभक्ति '**का**', '**के**', '**की**' का लोप हुआ है।

(च) अधिकरण तत्पुरुष

स्कूटरसवार = स्कूटर **पर** सवार
नीतिकुशल = नीति **में** कुशल
चिंतामग्न = चिंता **में** मग्न
जलसमाधि = जल **में** समाधि
कर्मनिरत = कर्म **में** निरत (लगा हुआ)
दानवीर = दान **में** वीर
पर्वतारोहण = पर्वत **पर** आरोहण
वनवास = वन **में** वास **[CBSE 2010 (Term – I)]**
शरणागत = शरण **में** आगत
घुड़सवार = घोड़े **पर** सवार
आपबीती = आप **पर** बीती
शास्त्रप्रवीण = शास्त्र **में** प्रवीण **[CBSE 2010 (Term – I)]**
जलज = जल **में** ज (जन्मा)
लोकप्रिय = लोक **में** प्रिय
धर्मवीर = धर्म **में** वीर
कलाकुशल = कला **में** कुशल **[CBSE 2010 (Term – I)]**
संगीतनिपुण = संगीत **में** निपुण
रणवीर = रण **में** वीर

इन उदाहरणों में अधिकरण कारक की विभक्ति '**में**', '**पर**' का लोप हुआ है।

3. कर्मधारय समास

जिस समास के दोनों पदों में **विशेषण-विशेष्य** या **उपमेय-उपमान** का संबंध होता है और **उत्तरपद** प्रधान होता है, उसे **कर्मधारय समास** कहते हैं।

(1) पूर्व (पहला) पद विशेषण तथा उत्तर (दूसरा) पद विशेष्य

समस्तपद	**विशेषण**	**विशेष्य**	**समास-विग्रह**
पीतांबर	पीत	अंबर	पीत (पीला) **है जो** अंबर
नीलकमल	नील	कमल	नीला **है जो** कमल
कालीमिर्च	काली	मिर्च	काली **है जो** मिर्च
नीलगगन	नील	गगन	नीला **है जो** गगन
महात्मा	महा	आत्मा	महान **है जो** आत्मा
			[CBSE 2010 (Term – I)]
शुभागमन	शुभ	आगमन	शुभ **है जो** आगमन
भलामानस	भला	मानस	भला **है जो** मानस
सज्जन	सत्	जन	सत् **है जो** जन
सद्धर्म	सत्	धर्म	सत् **है जो** धर्म
सत्संगति	सत्	संगति	सत् **है जो** संगति
नीलकंठ	नील	कंठ	नीला **है जो** कंठ
नीलांबर	नील	अंबर	नीला **है जो** अंबर
श्वेतांबर	श्वेत	अंबर	श्वेत **है जो** अंबर
महाराजा	महा	राजा	महा **है जो** राजा
महाजन	महा	जन	महा **है जो** जन

GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

© GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

महादेव	महा	देव	महा **है जो** देव
महाविद्यालय	महा	विद्यालय	महा **है जो** विद्यालय

(2) पूर्वपद विशेष्य और उत्तरपद विशेषण

समस्तपद	विशेष्य	विशेषण	समास-विग्रह
पुरुषोत्तम	पुरुष	उत्तम	पुरुषों में **जो** उत्तम
			[CBSE 2010 (Term – I)]
ऋषिप्रवर	ऋषि	प्रवर	ऋषियों में **जो** प्रवर (श्रेष्ठ)
नराधम	नर	अधम	नरों में **जो** अधम (नीच)

(3) विशेषण उभयपद अर्थात जहाँ दोनों पद विशेषण होते हैं

समस्तपद	पूर्वपद	उत्तरपद	समास-विग्रह
श्यामसुंदर	श्याम	सुंदर	श्याम **और** सुंदर
शीतोष्ण	शीत	उष्ण	शीत **और** उष्ण
खटमिट्ठा	खट्टा	मीठा	खट्टा **और** मीठा

(6) पूर्वपद उपमान और उत्तरपद उपमेय

समस्तपद	उपमान	उपमेय	समास-विग्रह
कमलनयन	कमल	नयन	कमल **के समान** नयन
वज्रदेह	वज्र	देह	वज्र **के समान** देह
कंचनवर्ण	कंचन	वर्ण	कंचन (सोने) **के समान** वर्ण (रंग)

(5) पूर्वपद उपमेय और उत्तरपद उपमान

समस्तपद	उपमेय	उपमान	समास-विग्रह
चरणकमल	चरण	कमल	कमल **के समान** चरण
पुरुषसिंह	पुरुष	सिंह	सिंह **के समान** (शक्तिशाली) पुरुष
संसारसागर	संसार	सागर	संसार **रूपी** सागर

4. द्विगु समास

जिस समास का **पहला पद संख्यावाची विशेषण** होता है और **समस्तपद समाहार** यानी समूह का बोध कराता है, उसे **द्विगु समास** कहते हैं। जैसे—

सप्तर्षि	सात ऋषियों **का समूह**
त्रिभुज	तीन भुजाओं **का समूह**
नवरात्रि	नौ रात्रियों **का समाहार**
त्रिशूल	तीन शूलों **का समूह**
सतसई	सात सौ (दोहों) **का समाहार**
पंजाब	पाँच आबों (जल) **का समूह**

5. द्वंद्व समास

जिस समास के **दोनों पद प्रधान** होते हैं, उन्हें **द्वंद्व समास** कहते हैं। द्वंद्व समास के दोनों पद योजक-चिह्न द्वारा जुड़े होते हैं। कभी-कभी योजक-चिह्न का लोप भी होता है। जैसे—

जीवन-मरण	=	जीवन **और** मरण
अन्न-जल	=	अन्न **और** जल
सत्यासत्य	=	सत्य **और** असत्य
लाभ-हानि	=	लाभ **या** हानि
गुण-दोष	=	गुण **और** दोष
राजा-रंक	=	राजा **और** रंक

6. बहुव्रीहि समास

जिस सामासिक पद में कोई भी पद प्रधान न होकर कोई **अन्य (तीसरा) पद प्रधान** होता है, उसे **बहुव्रीहि समास** कहते हैं। बहुव्रीहि समास से निर्मित शब्द विशेषण का कार्य करता है। जैसे—

पीतांबर	= पीत हैं अंबर जिसके	(श्रीकृष्ण, विष्णु)
वीणापाणि	= वीणा है पाणि (हाथ) में जिसके	(सरस्वती / नारद)
नीलकंठ	= नीला है कंठ जिसका	(शिव)
दशानन	= दश हैं आनन जिसके	(रावण)
त्रिलोचन	= तीन हैं लोचन जिसके	(शिव)
चक्रपाणि	= चक्र है पाणि में जिसके	(विष्णु)
चंद्रशेखर	= चंद्र है शिखर पर जिसके	(शिव)
चतुर्मुख	= चार हैं मुख जिसके	(ब्रह्मा)

कर्मधारय और बहुव्रीहि समास में अंतर

कर्मधारय समास के दोनों पदों में **विशेषण-विशेष्य** या **उपमेय-उपमान** का संबंध होता है, जबकि बहुव्रीहि समास के **दोनों पद मिलकर किसी अन्य पद की ओर संकेत करते हैं** यानी तीसरे पद की विशेषता प्रकट करते हैं। जैसे—

पीतांबर = पीत (पीला) है जो अंबर (वस्त्र)
— (कर्मधारय समास)
= पीत (पीला) है अंबर जिसका (श्रीकृष्ण)
— (बहुव्रीहि समास)

महादेव = महान है जो देव — (कर्मधारय समास)
= महान है जो देवता (शिव/शंकर)
— (बहुव्रीहि समास)

महात्मा = महान है जो आत्मा
— (कर्मधारय समास)
= महान है आत्मा जिसकी (ऋषि, मुनि)
— (बहुव्रीहि समास)

नीलकंठ = नीला है जो कंठ
— (कर्मधारय समास)
= नीला है कंठ जिसका (शिव)
— (बहुव्रीहि समास)

GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

© GOYAL BROTHERS PRAKASHAN